1 * तू ज़िन्दा है तो........

'तू ज़िन्दा है तो...... ' कविता गहरे जीवन राग और उत्साह को प्रकट करती है । इस जीवन राग में अतीत के दुखदायी पलों को भूलकर आशा और जीत की नई दुनिया का स्वागत करने की प्रेरणा है ।

तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर

ये ग़म के और चार दिन, सितम के और चार दिन
ये दिन भी जायेंगे गुज़र, गुज़र गये हज़ार दिन
कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार की नज़र
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो..........

सुबह और शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन ज़मीन गा रही है कब से झूम-झूम कर
तू आ मेरा सिंगार कर तू आ मुझे हसीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो.................

हजार भेष धर के आई मौत तेरे द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी, चली गई वो हारकर
नई सुबह के संग सदा तुझे मिली नई उमर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो.........

हमारे कारवां को मंज़िलों का इंतज़ार है
ये आँधियों, ये बिजलियों की पीठ पर सवार है
तू आ कदम मिला के चल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो.........

ज़मीं के पेट में पली अगन, पले हैं ज़लज़ले
टिके न टिक सकेंगे भूख रोग के स्वराज ये
मुसीबतों के सर कुचल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो........

बुरी है आग पेट की, बुरे हैं दिल के दाग़ ये
न दब सकेंगे, एक दिन बनेंगे इंकलाब ये
गिरेंगे ज़ुल्म के महल, बनेंगे फिर नवीन घर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर
तू ज़िन्दा है तो...............

शंकर शैलेन्द्र

शब्दार्थ

यक़ीन	–	भरोसा
सितम	–	ज़ुल्म
गुज़र	–	बीतना
चमन	–	बाग़, फुलवारी
बहार	–	शोभा, सुन्दरता
ज़ुल्म	–	अत्याचार
सिंगार	–	शृंगार
कारवाँ	–	काफ़िला
ज़मीं	–	ज़मीन
अगन	–	आग
ज़लज़ले	–	भूकंप
स्वराज्य	–	अपना राज्य

गतिविधि :

1. अपनी कक्षा में समूह के साथ सस्वर गायन कीजिए।
2. कविता से निम्न श्रेणियों के शब्दों की सूची बनाइए:–

तत्सम	तद्भव	अरबी–फ़ारसी

2 ईदगाह

प्रेमचंद रचित यह कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। यह कहानी वंचित बचपन के परिस्थितियों पर मार्मिक ढंग से टिप्पणी करती है। अभावग्रस्त जीवन बाल मन को वयस्क की तरह सोचने के लिए मजबूर करता है। हामिद खिलौने की जगह अपनी दादी के लिए चिमटा खरीद कर लाता है और दादी अमीना के लिए यह दृश्य गहरी संवेदना की अभिव्यक्ति का कारण बनता है। दादी को लगता है, काश ! इस बच्चे को भी वह सब कुछ मिलता, जो पड़ोस के बच्चे को मिलता है।

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। उनकी जेबों में कुबेर का धन जो भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना ख़ज़ाना निकालकर गिनते हैं और ख़ुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद के पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। इनसे तो अनगिनत चीज़ें खरीद सकते हैं खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या । और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का ग़रीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट चढ़ गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं! इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही थी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है ''तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।''

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद को कैसे अकेले मेले में जाने दे। कहीं खो जाए तो क्या होगा ? नन्ही-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे! पैर में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद ले लेगी; लेकिन यहाँ सिवइयाँ कौन पकाएगा? धोबिन, नाइन, मेहतरानी और चूड़िहारिन सभी तो आएँगी। सभी को सिवइयाँ चाहिए। साल भर का त्योहार है।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। उसके पैरों को तो जैसे पर लग गए हैं। कभी-कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशाना लगाता है। माली अंदर से गाली देता हुआ निकलता है। लड़के खूब हँस रहे हैं।

ईदगाह आ गई। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया। नीचे पक्का फर्श है। रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक दूर तक चली गई हैं। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके-सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ घुटनों के बल बैठे जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ।

नमाज़ खत्म हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौनों की दुकानों पर धावा होता है। तरह-तरह के खिलौने हैं सिपाही, गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती, धोबिन और साधु। महमूद सिपाही लेता है, ख़ाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर पर मशक रखे। नूर को वकील से प्रेम है। काला चोंगा, नीचे सफ़ेद अचकन, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? कहीं हाथ से छूट गया, तो चूर-चूर हो जाएगा, पानी पड़ा तो सारा रंग धुल जाएगा। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा?

सब अपने-अपने खिलौनों की तारीफ कर रहे हैं। हामिद ललचाई आँखों से खिलौनों को देख रहा है। चाहता है कि ज़रा देर के लिए ही सही, वह उन्हें हाथ में ले सकता। वह हाथ आगे बढ़ाता है लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचाता रह जाता है।

मिठाइयों की दुकानें आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब जामुन, किसी ने सोहन हलवा। मजे से खा रहे हैं। लेकिन हामिद! अभागे के पास सिर्फ तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता?

मोहसिन उसकी ललचाई नजरें देखकर कहता है ''हामिद, रेवड़ी ले खा, कितनी खुशबूदार है।'' जैसे ही हामिद हाथ फैलाता है, मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे, और सम्मी खूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मिठाई की दुकानों के बाद लोहे की चीज़ों की दुकानें हैं। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख़याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वे कितनी प्रसन्न होंगी? फिर उनकी

उँगलियाँ कभी नहीं जलेंगी। खिलौने से क्या फ़ायदा! व्यर्थ में पैसे ख़राब होते हैं।

अम्मा चिमटा देखते ही कहेंगी 'मेरा बच्चा अम्मा के लिए चिमटा लाया है।' हज़ारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन दुआएँ देगा। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं।

दुकानदार से बड़ी मुश्किल से मोलभाव करके हामिद ने चिमटा तीन पैसों में ले लिया। उसे कंधे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ साथियों के पास आया। मोहसिन ने हँसकर कहा "यह चिमटा क्यों लाया पगले? इससे क्या करेगा?" महमूद बोला, "चिमटा कोई खिलौना है?"

हामिद बोला, "क्यों नहीं? अभी कंधे पर रखा तो बंदूक हो गई। हाथ में लिया फ़कीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम सबके सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है चिमटा।"

सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला "मेरी खंजरी से बदलोगे?"

हामिद ने खंजरी की ओर उपेक्षा से देखा "मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खंजरी का पेट फाड़ डाले।" चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया। औरों ने तीन-तीन, चार-चार पैसे ख़र्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया।

सबने अपने-अपने खिलौने देकर चिमटा पकड़ने का प्रस्ताव रखा। हामिद मान गया। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने ख़ूबसूरत खिलौने हैं। पर उसका चिमटा तो रुस्तमे हिंद है सभी खिलौनों का बादशाह।

गाँव पहुँचकर बच्चों ने अपने-अपने खिलौने से खेला, पर थे तो वे मिट्टी के। कुछ ही देर में टूट-फूट गए। अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी। गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी! "यह चिमटा कहाँ से लाया?"

"मैंने मोल लिया है।" "कै पैसे में?" "तीन पैसे दिए।"

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है, न कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा। "सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?"

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, "तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।" बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। यह स्नेह मूक था, ख़ूब ठोस,

रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर कितना ललचाया होगा मन! इतना ज़ब्त इससे हुआ कैसे! वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया।

अमीना की आँखें भर आईं। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

प्रेमचंद

शब्दार्थ

अभागिन	–	भाग्यहीन स्त्री
गत	–	पिछला
दिल कचोटना	–	अफसोस होना, मन में कसक होना, घबराना
ईदगाह	–	वह स्थान जहाँ ईद के दिन नमाज़ पढ़ी जाती है
सिजदे	–	सम्मान में सर झुकाना
निगाह	–	दृष्टि, नज़र
प्रदीप्त	–	जला हुआ
मशक	–	पशु की खाल से बना थैला
भिश्ती	–	मशक से पानी भरने वाला
पोथा	–	मोटी किताब, कॉपी
उपेक्षा	–	नज़रअंदाज
विवेक		भले-बुरे का ज्ञान, समझ
ज़ब्त	–	दबाया हुआ
गद्गद्	–	अत्यन्त प्रसन्न
दामन	–	आँचल
ठोस	–	मज़बूत

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. ईद के दिन अमीना क्यों उदास थी ?
2. हामिद मिठाई या खिलौने के बदले चिमटे का चयन करता है। क्यों ?
3. मेला जाने से पहले हामिद दादी से क्या कहता है ?
4. मेले में चिमटा खरीदने से पहले हामिद के मन में कौन-कौन से विचार आये ? वर्णन कीजिए।
5. हामिद ने चिमटे को किन-किन रूपों में उपयोग करने की बात कही है ?
6. ईदगाह कहानी आपको कैसी लगती है? इसकी मुख्य विशेषताएँ बताइए ।
7. चिमटा देखकर अमीना के मन में कैसा भाव जगा ?

8. **निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और उसके आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए**

नमाज़ खत्म हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धावा होता है। तरह-तरह के खिलौने हैं सिपाही, गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती, धोबिन और साधु। महमूद सिपाही लेता है, ख़ाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर पर मशक रखे। नूरे को वकील से प्रेम है। काला चोंगा, नीचे सफेद अचकन, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले ? कहीं हाथ से छूट गया, तो चूर-चूर हो जाएगा, पानी पड़ा तो सारा रंग धुल जाएगा। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा ?

(क) नमाज़ खत्म होने के बाद लोग क्या कर रहे थे ?

(ख) दुकानों में किस-किस तरह के खिलौने थे ?

(ग) वे खिलौने किस चीज के बने थे ?

(घ) महमूद, मोहसिन और नूरे ने कौन-कौन से खिलौने खरीदे ?

(ङ) परिच्छेद में सिपाही, भिश्ती और वकील के हुलिये का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार आप राजा और साधु के हुलिये का वर्णन कीजिए।

(च) अनुच्छेद में आए विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखिए।

(छ) 'वर्दी' और 'पोथा' के समानार्थी लिखिए।

पाठ से आगे

1. महमूद, मोहसिन, नूर और हामिद में किसका चरित्र अच्छा लगा? कारण बताइए।
2. क्या हामिद बच्चों की सामान्य छवि से अलग हटकर एक नयी छवि प्रस्तुत करता है? कैसे?
3. "चुनौती बच्चे को परिपक्व बना देती है।" इस उक्ति की व्याख्या कीजिए।
4. 'त्योहार हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं।' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

व्याकरण

वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(क) रंग जमाना

(ख) गद्गद् होना

(ग) भेंट चढ़ना

(घ) बाल बाँका न होना

(ङ) पैरों में पर लगना

(च) कुबेर का धन मिल जाना।

गतिविधि

1. मेले में आपने क्या-क्या देखा, उसका चित्र बनाइए।
2. अपने शिक्षक से रमज़ान के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. ईद और मुहर्रम में क्या अंतर है ? अपने शिक्षक से समझिए।
4. **आपके अनुसार निम्न परिस्थितियों में हामिद क्या करता?**

-- यदि उसके पास बारह पैसे होते।

-- यदि उसके पास पंद्रह पैसे होते।

-- यदि उसके साथ उसके पिता होते।

3 कर्मवीर

कर्म के प्रति निष्ठा ही व्यक्ति की सफलता का निर्धारण करती है। बाधाएँ व्यक्तित्व को निखारने का काम करती हैं। कविता बाधाओं से जूझते हुए उन कर्मशील लोगों की बात करती है, जो सभ्यता-संस्कृति का निर्माण करते हैं।

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले ।।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते-कहते हैं जो कुछ, कर दिखाते हैं वही।।
मानते जी की हैं, सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत् में आप ही।।
भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं ।।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।।
आज-कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।।
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किए।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए ।।

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना।।
जो कि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
'है कठिन कुछ भी नहीं' जिनके है जी में यह ठना।।
कोस कितने ही चलें, पर वे कभी थकते नहीं।
कौन-सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं।।

काम को आरम्भ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूलकर मुँह मोड़ते।।
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहीं तोड़ते।
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारबन।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन ।।

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे।
सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।।
गर्भ में जल-राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महामंगल रचा देते हैं वे ।।
भेद नभ-तल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।
है उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया।।

कार्य-स्थल को वे कभी नहीं पूछते 'वह है कहाँ'।
कर दिखाते हैं असंभव को भी संभव वे वहाँ।।
उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ।
वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ।
डाल देते हैं विरोधी सैकड़ों ही अड़चनें।
वे जगह से काम अपना ठीक करके ही टलें।।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले-फले।
बुद्धि, विद्या, धन, विभव के हैं जहाँ डेरे डले।।
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले।।
लोग जब ऐसे समय पाकर जनम लेंगे कभी।
देश की औ' जाति की होगी भलाई भी तभी।।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

शब्दार्थ

बाधा	–	रूकावट, डर, भय
विविध	–	विभिन्न, अनेक प्रकार के
बहु	–	बहुत, ज़्यादा
भाग	–	भाग्य
आन	–	गौरव की भावना, प्रतिज्ञा, संकल्प की भावना
यत्न	–	प्रयास
उज्ज्वल	–	चमकीला
बेड़ा	–	जलयान
विभव	–	ऐश्वर्य, दौलत
सपूत	–	अच्छा बेटा

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. कर्मवीर की पहचान क्या है?
2. अपने देश की उन्नति के लिए आप क्या-क्या कीजिएगा?
3. आप अपने को कर्मवीर कैसे साबित कर सकते हैं ?

पाठ से आगे

1. परिश्रमी के द्वारा मनोवांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। कैसे ?
2. ''कल करै सो आज कर, आज करै सो अब। पल में परलय होइगा, बहुरि करेगा कब।'' इस पंक्ति का अर्थ लिखिए ।
3. आप किसे अपना आदर्श मानते हैं और क्यों?

व्याकरण

1. दिए गए शब्दों से विपरीतार्थक शब्द-युग्म बनाइए, जैसे: अमीर-ग़रीब,
   दुख, कठिन, भलाई, सुख, जन्म, सरल, बुराई, सपूत, मरण, विरोधी, कपूत, समर्थक, असंभव, नभ, फूल, आरंभ, बुरा, वीर, संभव, तल, शूल, अंत, भला, कायर
2. सामान्य वाक्य - रेगिस्तान में जल ढूँढ़ना बहुत कठिन है।
   मुहावरेदार वाक्य - रेगिस्तान में जल ढूँढ़ना लोहे के चने चबाने की तरह है।

उक्त उदाहरण की तरह निम्नलिखित सामान्य वाक्यों को भी मुहावरेदार वाक्यों में बदलिए

(क) रमेश अपनी माँ का प्यारा लड़का है ।
(ख) पुलिस को देखते ही चोर भाग गए ।

5 हुंडरू का जलप्रपात

सामान्यतः यात्रा वृतांतों में पारंपरिक रूप से महत्त्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक स्थानों का वर्णन किया जाता है। 'हुंडरू का जलप्रपात' आदिवासी संस्कृति की विशिष्टता को उभारने वाला यात्रा वृतांत है। इस दृष्टि से पाठ उल्लेखनीय है। पहाड़, नदी, जंगल की सुंदरता के साथ ही, उस इलाके में आसानी से उपलब्ध अबरक और कोयला खदानों का भी वर्णन है। यानी प्रकृति के साथ ही, मनुष्य की जिजीविषा और श्रम की महत्ता का भी संयोजन है। पाठ में बहुलवादी संस्कृति (सामासिक संस्कृति) के प्रति विश्वास प्रकट किया गया है। झरने की सुंदरता और प्राकृतिक दृश्यों की विशिष्टता के उद्घाटन से पाठ रोचक बन गया है।

''छोटानागपुर स्वर्ग का एक टुकड़ा है।''

ज़मीन में हरियाली, आकाश में नीलिमा। पग-पग पर पहाड़ों को देखकर धरती भी ऊबड़-खाबड़ और ऊँची हो गई है। तीव्र धारा और गँदले पानी के साथ नदियाँ बलखाती बह रही हैं जिन्होंने मैदानों की छाती चीरी है और पर्वतों का अन्तर फोड़ा है। झाड़ी-झुरमुटों, पेड़-पौधों और लता-गुल्मों के साथ जंगल अपनी जगह पर आबाद है जिन्होंने जंगली जानवरों को शरण दिया है। बेहतरीन सड़कें जिनके बनाने में ठीकेदारों को कम तरद्‌दुद और विभाग को कम व्यय पड़ा है, साँप की तरह भागी जा रही हैं और उन्हीं के साथ कुछ सवारी पर, कुछ पैदल मुसाफिर भी द्रुतगति से चले जा रहे हैं।

धरती पर आदिवासियों का नृत्य हो रहा है और आसमान में बादल आँख-मिचौनी खेल रहे हैं। जन-जन के कंठ से मादक गीतों की सृष्टि हो रही है जिनसे पहाड़ और मैदान गूँज रहे हैं। जंगली जानवरों की आवाज के साथ जंगल का कोना-कोना बोल रहा है। विचित्र-विचित्र पक्षियों की चहकन से पेड़ों की शाखा-शाखा गुलज़ार है।

सुन्दर जलवायु, मनहर वातावरण। हवा धीरे-धीरे डोलती है तो अपने साथ फूलों की सुरभि बिखेरती चलती है। बादल धीरे-धीरे बरसते हैं तो उनसे स्वस्थ शरीर और सुन्दर स्वास्थ्य का वरदान मिलता है। नदियाँ कलकल-छलछल स्वर में बहती हैं तो किनारे पर के रहनेवाले को अमृत बाँटती जाती हैं। झरने सतत झर-झरकर आँखों को तरी तथा नमी, कल्पना को सुन्दर खुराक, चित्त को स्वच्छता और पवित्रता प्रदान करते हैं।

खानों में कोयला और अबरक, जंगल में तरह-तरह की लकड़ी, फूल-फुनगियों पर नाचती तितलियाँ, फल-भार से झुके जा रहे पेड़, शोभा-संपन्न अवर्णनीय घाटियाँ, सुषमा की दर्शनीय नदियाँ, हरीतिमावाले मनमोहक मैदान, मन पर जादू-जैसा असर करनेवाले पर्वत, मस्त निवासी इन सबके साथ, यह छोटानागपुर है।

एक ओर पृथ्वी अपने कोष को उगल रही है, तो वह कोयला बनकर लोगों के घरों में सोना ला रहा है। एक ओर पृथ्वी अपनी चमक-दमक का प्रदर्शन कर रही है तो वह

अबरक बनकर दुनिया का शृंगार कर रही है। अपने निरंतर संघर्ष से नदियाँ पत्थरों को ख़राद-ख़राद एक नवीन आकार में प्रस्तुत कर रही हैं, तो उसे लोग श्वेत शालिग्राम कहकर पूजते हैं। पत्थरों से करुणा की धारा झर रही है जिसे लोग झरना कहकर विस्मित भाव से देखते हैं।

इस छोटानागपुर में कई दर्शनीय झरने हैं, पर उनमें हुंडरू का झरना निराला है। मैं जब भी राँची गया, हुंडरू देखने ज़रूर जाता हूँ। यह झरना है जिसने मेरे मन-प्राण पर जादू किया है; यह झरना है जिसकी स्मृति भूलती नहीं; यह झरना है जिसके बारे में लिखते हुए मैं अघाता नहीं।

राँची से पुरुलियावाली सड़क पर 14 मील जाने के बाद एक सड़क मिलती है जिससे हुंडरू पहुँचते हैं। पुरुलिया रोड से उसकी दूरी 13 मील है। यों राँची से हुंडरू 27 मील दूर है।

महात्मा गाँधी ने कहा है कि साध्य की पवित्रता एवं महत्ता तभी है जब उसका साधन भी महान हो। महान मंज़िल पर पहुँचने के लिए मार्ग भी महान ही चाहिए। जैसा हुंडरू का झरना, वैसा उसका मार्ग।

राँची से चलनेवाले मुसाफिर को झरना पहुँचने तक ऐसे-ऐसे सुन्दर मैदान मिलते हैं कि वहाँ थोड़ी देर ठहरकर टहलने की इच्छा होती है। ऐसे जंगल दिखलाई पड़ते हैं जिनकी विभीषिका से शायद बाघ को भी डर लगता हो और बीच-बीच में पहाड़ी उस पर झाड़ी। सब दर्शनीय, सब वर्णनीय! चूँकि महीना अगस्त का था, इसलिए धान की क्यारी की भी न्यारी हरियाली थी। बलखाती सड़क जिसपर चलने में आनंद आए। पथरीली ज़मीन एवं पत्थर की छाती चीरकर बहनेवाली पतली नदी जिसके देखने में आनंद आए। पेड़ों पर चहकती चिड़ियाँ जिनकी चहक सुनने में आनंद आए। सब मिलकर आनंद को कई गुणा बढ़ा रहे थे। हवा यों डोल रही थी, जैसे सलाह लेकर डोल रही हो। छोटानागपुर के निवासी सादगी के अवतार और ग़रीबी की मूर्ति, जिनकी रहन-सहन में शत-प्रतिशत कला बसती है, मार्ग में यों खड़े थे, जैसे मेरा स्वागत कर रहे हों। मकई के पौधे कहीं-कहीं अगल-बगल में यों लहरा रहे थे-जैसे यहाँ वालों की किस्मत लहरा रही हो।

इस प्रकार मार्ग-दर्शन का आनंद लेते हुए हम हुंडरू के पास पहुँचे। एक बार मन ही मन मैंने झरने को प्रणाम किया।

पहाड़ पर पानी की यह अजीब लीला है जिसका मुकाबला न रामलीला करे, न रासलीला। पानी का इस प्रकार उछलना-कूदना, धूम मचाना और उसकी यह आवाज़ जैसे, दस-पाँच हाथी एक बार चिंघाड़ रहे हों, जैसे- दस-पाँच ट्रेन के इंजन एक साथ आवाज़ कर रहे हों,जैसे- एक साथ कई हवाई जहाज़ चक्कर काट रहे हों या जैसे- कई सहस्र नाग एक साथ फन फैलाकर फुँफकार कर रहे हों। पहुँचने के साथ यात्री के कानों में ऐसी ही आवाज़ पड़ती है।

और अब झरना देखने लगा। वातावरण की पवित्रता ऐसी कि मालूम होता है, मानो हम देवलोक के समीप पहुँच गए।

है क्या यह ! युग-युग से पानी का आघात है-पत्थर की बर्दाश्त है और यों एक प्रकार से यह पत्थर की क्षमता का प्रदर्शन है। पर एक पत्थर ऐसा भी है जिसकी छाती को चीरकर पानी निकलता है। यों एक प्रकार से यह जल की क्षमता का प्रदर्शन है जिसके सामने पत्थर भी मात है। हाँ, पत्थर मात है-करुणा के सामने, प्रेम के सामने जिसके अपार बल के स्वरूप पत्थर की छाती से धारा फूटती है, पत्थर की आँख से आँसू निकलते हैं और पत्थर का कलेजा पिघल जाता है।

पहाड़ पर नदी का यह खेल है। यह नदी है स्वर्णरेखा-जिसके उद्गमस्थान से 50 मील आगे आकर हुंडरू का यह झरना है। स्वर्णरेखा नदी राँची, धनबाद, सिंहभूम एवं बालासोर जिलों से होकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

नदी जहाँ पहाड़ को पार करने की चेष्टा में पहाड़ पर चढ़ती है, वहाँ पानी की कई धाराएँ हो जाती हैं और जब सबकी सब धाराएँ एक होकर पहाड़ से नीचे गिरती हैं, एक विचित्र दृश्य दिखलाई देता है यही झरना है जिसकी ऊँचाई 243 फुट है। उजला पानी ऐसा प्रतीत होता है कि पानी के चक्कर और भँवर में पिसकर पत्थर का सफेद चूर्ण गिर रहा है। कभी ऐसा भी मालूम होता है कि रूई धुनने वाला अपनी धुनकी पर रूई धुनकर ऊँचे बैठा हुआ गल्ले को नीचे गिरा रहा है। बचपन में हवा की मिठाई लेकर फेरीवाला आता था तो उसका रंग लाल होता था। प्रतीत होता है, वैसी ही; लेकिन उजले रंग की हवा की मिठाई लेकर पर्वत आज स्वयं फेरी देने निकला है। और कहीं-कहीं बीच में चट्टान पर जब प्रबल धारा गिरती है, तो संघर्ष से इंद्रधनुष जैसा रंग उत्पन्न होता है। जान पड़ता है कि सतरंगा पानी हवा में उड़कर विलीन हो रहा है या हवा में उड़ता इंद्रधनुष फरफरा रहा है।

चारों ओर जंगल और पहाड़ के बीच में प्रकृति की यह लीलास्थली है। झरना के एक ओर का जंगल राँची में है, एक ओर का जंगल हजारीबाग में और बीच में झरना बह रहा है, मानो उसका यह संदेश हो कि वह सबके लिए है, सबका कल्याण उसका उद्देश्य है। वह न राँची का है, न हजारीबाग का, बल्कि सबका है।

बड़े झरने की बगल में एक इंच मोटी एक धारा ऊपर से नीचे धीरे-धीरे पत्थरों पर से उतर रही है-जैसे महादेवजी पर कोई भक्त दूध चढ़ा रहा हो। नीचे जहाँ घनघोर धारा गिरती है, वहाँ पानी करीब 20 फुट ऊपर उछलता है। लगता है, पत्थर को चीरकर आनेवाले पानी का स्वागत करने और उसको कंठहार पहनाने के लिए नीचे से पानी ऊपर दौड़ता है।

मेरे मित्र कहते हैं कि शिवजी की बारात शायद इस राह से गुजरी थी। उसका स्वागत करने को पर्वत ने इस गुलाबपाश का प्रबन्ध किया था। वही गुलाबपाश शाश्वत होकर अभी भी झरझर कर रहा है।

स्वयं झरने से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत मालूम होता है झरने के आगे की घाटी का दृश्य। पहाड़ों के बीच एक पतली-सी नदी बहती जाती है, जैसे थर्मामीटर में एक पतला पारा हो। आगे भी एक पहाड़ मालूम होता है। ज्ञात होता है, पहाड़ नदी को ललकार रहा है कि यहाँ से तुम किसी प्रकार पार होकर मेरे आगे जा सको तो जानूँ। यहाँ पर नदी यों दिखाई देती है जैसे, नदी के इर्द-गिर्द पत्थरों का अंबार लगाकर उस पर झाड़ी उगाई गई हो। प्रकृति या परमात्मा ने अपने हाथ से यह सब किया होगा अन्यथा मनुष्य जाति में इतनी सामर्थ्य कहाँ? सैकड़ों वर्षों में भी मानव के प्रयत्नों से शोभा के इस विशाल वैभव की सृष्टि कठिन है।

पहाड़ के ऊपर से एक पतली-सी पगडंडी नीचे गई है और उसके सहारे हम भी कई बार नीचे गए हैं। नीचे जाकर हम अनिमेष कुछ देर तक इस शोभा से अपनी आँखों की प्यास बुझाते रहे हैं।

यह शोभा, यह छटा और यह दृश्य यह इतना बड़ा प्रपात जहाँ 243 फुट से पानी नीचे गिरता है! बीच-बीच में चट्टानों की वजह से हुंडरू की शोभा बिखर जाती है। पानी कुछ पीलापन लिए हुए है और यों सरसराता-हरहराता गिरता है कि कुछ भयंकर मालूम पड़ता है। जोन्हे में यहाँ पानी गिरता है, बिल्कुल सफेद है और यह भयंकरता भी उसमें नहीं है। वह माधुर्य और कोमलता से ओत-प्रोत जान पड़ता है। यहाँ का पानी निरंतर संघर्ष के साथ चट्टान पर गिरता हुआ, मानो आग की सृष्टि करता है जिसका धुआँ बराबर ऊपर उड़ता रहता है।

हुंडरू का पानी कहीं साँप की तरह चक्कर काटता है, कहीं हरिण की तरह छलाँग भरता है और कहीं बाघ की तरह गरजता हुआ नीचे गिरता है। सारा पानी एक जगह सिमटकर जहाँ नीचे गिरता है, उस जगह इसका रूप बहुत विशाल और भयंकर हो गया है। उस जगह हाथी भी जाए तो धारा के साथ कहाँ चला जाए, इसका पता मिलना मुश्किल है। इसके बाद धीरे-धीरे मंथर गति से इसका पानी नदी के रूप में जिसको देखने के लिए दिन-रात दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है।

यहाँ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की ओर से एक बँगला बनवा दिया गया है लेकिन खाने-पीने के सामान का यहाँ भी अभाव है। हुंडरू-प्रपात की भीड़ और चीजों का अभाव देखकर ख़्याल

आया कि यहाँ के लोग सचमुच अव्यावहारिक है। अगर किसी दूसरी जगह में ऐसा झरना होता, तो वहाँ के लोग इसके पास दुकान बगैरह सजाकर अपने लिए आय और दूसरों के लिए सुविधा की व्यवस्था कर देते।

धन्य हुंडरू! किस युग से किस महाकवि की वाणी, किस संगीत की स्वर-लहरी और किस प्रेमी की रुदन-ध्वनि से पिघलकर यह पाषाण बह रहा है, यह कह सकना असम्भव है। पत्थर का अंतस्थल जैसे पिघलकर बह रहा है, वैसे यदि मनुष्यों का अंतर द्रवित होकर बहने लगता तो संसार से कलह, कपट, स्वार्थ और छीना-झपटी का अंत हो जाता।

यहाँ दो तरह के पत्थर देखने में आए। एक वह पत्थर है जिसका अंतर फोड़कर विशाल झरना झर रहा है और एक वह भी पत्थर है जिस पर न जाने किस युग से पानी की यह धारा गिर रही है, पर वह जरा भी विचलित नहीं होता। ज्यों का त्यों खड़ा रहता है। घिसता भी नहीं, धँसता भी नहीं, खिसकता भी नहीं।

243 फुट का यह प्रपात निराला है। सुन्दरता यहाँ साकार हो गई है और वर्णन-शक्ति को यहाँ और भावों की कमी हो गई है। विचित्र शोभा है, जो कभी पुरानी नहीं पड़ती और धन्य प्रपात है, जो सदा एक-सा बह रहा है। अविरल और अविचल दोनों का उदाहरण यहाँ एक बार में ही उपस्थित है।

दानी दान करता है तो गुमान करता है; पर युग-युग से न जाने कितना पानी यह पहाड़ दान कर चुका, पर इसको कोई अभिमान नहीं है।

अंधे आवाज सुन लें तो प्रवाह का अंदाज लगा लें और बहरे प्रवाह देख लें तो आवाज का अंदाज लगा लें। समुद्र गंभीरता के लिए प्रसिद्ध है, तो यह हुंडरू अपनी चपलता के चलते मशहूर है।

किंवदंती यह है कि इस हुंडरू से 7 मील पर कुछ लोगों ने एक प्रपात देखा है जो इससे कई गुना बड़ा है; पर वहाँ जाने का रास्ता इतना बीहड़, घनघोर और भयंकर है कि जंगल के उस भाग में पहुँच सकना दुशवार है। अगर बात सही है, तो जंगल विभाग को उसका ठीक पता लगाकर वहाँ तक मार्ग का निर्माण कर देना चाहिए, जिससे वह प्रपात भी जनता के सामने आ सके।

जो भी हो, हुंडरू दर्शनीय है। इसकी याद भूलने की नहीं। कितने दिन गुजर गए, लेकिन पानी आँखों के सामने उसी प्रकार उछल-कूद मचा रहा है।

कामता प्रसाद सिंह 'काम'

शब्दार्थ

नीलिमा – नीलापन, श्यामलता
तरद्दुद – कठिनाई, परेशानी
द्रुतगति – तेज चाल

गुलज़ार	–	प्रफुल्लित, खिला हुआ
बाग़	–	बगीचा
अवर्णनीय	–	जिसका वर्णन नहीं हो सके
दर्शनीय	–	देखने लायक
विस्मित	–	आश्चर्यचकित
साध्य	–	लक्ष्य
विभीषिका	–	संकट, त्रासदी, भय
उद्‌गमस्थान	–	वह स्थान जहाँ से नदियाँ निकलती है, मूल-स्रोत, उत्पत्ति
विलीन	–	लुप्त हो जाना

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. ''जैसे हुंडरू का झरना वैसे उसका मार्ग''। इस कथन की व्याख्या कीजिए।
2. हुंडरू का झरना कैसे बना है ?
3. ''स्वयं झरने से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत मालूम होता है, झरने से आगे का दृश्य'' उस दृश्य की सुंदरता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
4. प्रस्तुत पाठ के आधार पर समझाइए कि किसी यात्रा-वृतांत को रोचक बनाने के लिए किन-किन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए?
5. यहाँ पर एक दृश्य का वर्णन दो तरह से किया गया है:

(क) हुंडरू का पानी कहीं साँप की तरह चक्कर काटता है, कहीं हरिण की तरह छलाँग भरता है और कहीं बाघ की तरह गरजता हुआ नीचे गिरता है।

(ख) हुंडरू का पानी चक्कर काटकर, छलाँग भरता हुआ नीचे गिरता है।

इनमें से कौन-सा वर्णन आपको अच्छा लगता है और क्यों?

पाठ से आगे

1. अपने किसी गाँव, शहर की यात्राएँ की होगी उसमें से किसी एक यात्रा का वर्णन कीजिए ?
2. अपने राज्य के किसी एक जलप्रपात का वर्णन कीजिए ?
5. आपके द्वारा की गई यात्रा के दौरान आपको किसी न किसी प्राकृतिक दृश्य ने अवश्य आकर्षित किया होगा । उस दृश्य का वर्णन कीजिए ?

गतिविधि

1. बिहार के दर्शनीय स्थलों की सूची बनाइए । प्राकृतिक सम्पदा तथा कृषि के ध्यान में रखते हुए बिहार एवं झारखंड का तुलनात्मक वर्णन कीजिए।
2. आपने-अपने गाँव और उसके आस-पास ईख, अरहर, सरसों के लहलहाते फूलों पर मंडराते हुए भौंरों को अवश्य देखा होगा। साथ ही आम की मंजरियों पर मकरन्द को चूसते हुए मधुमक्खियों के झुंड एवं आम के पल्लवों के बीच छिपी हुई कोयल की कूक भी आपने अवश्य सुनी होगी। इस प्रकार के दृश्य को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

6 बिहारी के दोहे

रीतिकाल के प्रतिष्ठित शृंगारिक कवि बिहारी के दोहे गागर में सागर हैं। वैसे तो बिहारी प्रेम के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं, पर उनके भक्ति और नीतिपरक दोहों को भी व्यापक लोकप्रियता मिली। इस पाठ में उनके द्वारा रचित तीनों तरह के दोहे शामिल हैं।

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झांई परै स्यामु हरित दुति होय।।

जपमाला, छापै, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु।।

बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सोहँ करैं भौं हनु हँसै, दैन कहे नटि जाइ।।

जब-जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सुधि जाँहि।
आँखिनु आँखि लगी रहैं, आँखें लागति नाँहि।।

नर की अरु नल नीर की गति एकैं करी जोय।
जेतो नीचौ ह्वै चलै तेतो ऊँचो होय।।

संगति सुमति न पावही परे कुमति के धन्ध।
राखौ मेलि कपूर में हींग न होत सुगंध।।

बड़े न हूजै गुनन बिनु, बिरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सो कनक, गहनो गढ़्यो न जाय।।

दीरघ साँस न लेहु दुख, सुख साईं हि न भूल।
दई दई क्यों करतू है, दई दई सु कबूलि।।

बिहारी

शब्दार्थ

सरै	निकलना, बनना
काँचै	कच्चा
वृथा	व्यर्थ, बेकार
साँचै	सच्ची
राँचै	प्रसन्न
नर	मनुष्य
नीर	पानी, जल

जेतो	जितना
तेतो	उतना
धन्ध	रोज़गार, काम
कुमति	ख़राब बुद्धि
गुनन	गुण
बिनु	बिना, रहित
कनक	सोना, धतूरा
दीरघ साँस	लंबी साँस
साईं हि	स्वामी को
कबूलि	स्वीकार करना
बतरस लालच	बातचीत करने के आनंद के लोभ से
लाल –	कृष्ण
लुकाई	छिपाकर
सौहँ	शपथ
नटि जाई	मुकर जाना
सुधि कीजियै	स्मरण किए जाते हैं
सुधि	चेतना
जाँहि	जाती रहती है
सुमति	अच्छी बुद्धि

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. **उन दोहों को लिखिए जिनमें निम्न बातें कही गईं हैं :**
(क) बाह्याडंबर व्यर्थ है। (ख)नम्रता का पालन करने से ही मनुष्य श्रेष्ठ बनता है। (ग) बिना गुण के कोई बड़ा नहीं होता। (घ) सुख-दुख समान रूप से स्वीकारना चाहिए।

2. दुर्जन के साथ रहने से अच्छी बुद्धि नहीं मिल सकती। इसकी उपमा में कवि ने क्या कहा है?

3. **रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :**
(क) नर की अरु..........................ऊँचै होई।।
(ख) जपमाला, छापै, तिलक......................साँचै, राँचै रामु।।
(ग) बड़े न हूजै..........................गढ्यो न जाय।।
(घ) दीरघ साँस न लेहु दुख..........................दई सु कबूलि।।

4. गोपियों ने कृष्ण की मुरली क्यों छुपाई?

पाठ से आगे

1. गुण नाम से ज्यादा बड़ा होता है। कैसे?
2. 'कनक' शब्द का प्रयोग किन-किन अर्थों में किया गया है।
3. हींग को कर्पूर के साथ रखने से सुगंधित क्यों नहीं होता है?

व्याकरण

1. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

भव, नर, बाधा, तन, नीर, कनक

2. निम्न शब्दों के आधुनिक / खड़ी बोली रूप लिखिए :

अरु, जेतौ, तेतौ, हरौ, वृथा, गुनन, बिनु ।

गतिविधि

1. रीतिकालीन अन्य कवि की रचनाओं को भी पढ़िए और वर्ग में सुनाइए ।
2. 'दई दई क्यौं करतू है, दई दई सु कबूलि'

   उपरोक्त पंक्ति में 'दई' शब्द बार-बार आया है जिसका अर्थ भिन्न-भिन्न है। दई=ईश्वर, दई=दिया। एक ही शब्द से जब दो प्रकार के अर्थ निकलते हैं तो वहाँ 'यमक' अलंकार होता है। इसी प्रकार के अन्य अलंकारों के बारे में शिक्षक/शिक्षिका से जानिए तथा उन पर चर्चा कीजिए।

7 ठेस

लोक मन के मर्मज्ञ कलाकार फणीश्वरनाथ रेणु की 'ठेस' कहानी में मिथिलांचल की लोकसंस्कृति का प्रभावी वर्णन है। यह कहानी कलाकार के मन की विशिष्टताओं का मार्मिक वर्णन करती है। श्रम के प्रति सम्मान की भावना, रिश्तों की गहराई और मनुष्यता की पक्षधरता को समझने में पाठ का योगदान महत्त्वपूर्ण है। आंचलिक कहानी की ख़ूबसूरती, घटना एवं संवेदना की दृष्टि से भी कहानी उल्लेखनीय है।

खेती-बारी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते । लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं । इसलिए खेत-खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को । क्या होगा उसको बुलाकर ? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक-तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा। पगडंडी पर तौल-तौलकर पाँव रखता हुआ, धीरे-धीरे । मुफ़्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है।

................आज सिरचन को मुफ़्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई । एक समय था, जबकि उसकी मड़ैया के पास बड़े-बड़े बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं । उसे लोग पूछते ही नहीं थे, उसकी ख़ुशामद भी करते थे । ....अरे, सिरचन भाई ! अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है सारे इलाके में । एक दिन का समय निकालकर चलो । कल बड़े भैया की चिट्ठी आई है शहर से। सिरचन से एक जोड़ा चिक बनवाकर भेज दो ।

मुझे याद है .... मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता भोग क्या-क्या लगेगा ?

माँ हँसकर कहती, जा-जा, बेचारा मेरे काम में पूजा-भोग की बात नहीं उठाता कभी।

ब्राह्मण टोली के पंचानन्द चौधरी के छोटे लड़के को एक बार मेरे सामने ही बेपानी कर दिया था सिरचन ने तुम्हारी भाभी नाख़ून से खाँटकर तरकारी परोसती है । और, इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम कहार-कुम्हारों की घरवाली बनाती है । तुम्हारी भाभी ने कहाँ सीखा ?

इसलिए, सिरचन को बुलाने के पहले मैं माँ से पूछ लेता .... ।

सिरचन को देखते ही माँ हुलसकर कहती-आओ सिरचन । आज नेनू मथ रही थी, तो तुम्हारी याद आई । घी की डाड़ी (खाखोरन) के साथ चूड़ा तुमको बहुत पसन्द है न............... । और बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है, उसकी ननद रूठी हुई है, मोथी की शीतलपाटी के लिए ।

सिरचन अपनी पनियायी जीभ को सम्भालकर हँसता । घी की सोंधी सुगन्ध सूँघकर ही आ

रहा हूँ, भाभी । नहीं तो इस शादी-ब्याह के मौसम में दम मारने की भी छुट्टी कहाँ मिलती है।

सिरचन जाति का कारीगर है । एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता । फिर, कुच्चियों को रँगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त। ....काम करते समय उसकी तन्मयता में जरा भी बाधा पड़ी कि गेहुँअन साँप की तरह फुंफकार उठता । फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम । सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं ।

बिना मजदूरी के पेटभर भात पर काम करनेवाला कारीगर । दूध में कोई मिठाई न मिले, कोई बात नहीं किन्तु बात में जरा भी झाल वह नहीं बरदाश्त कर सकता ।............

सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं............तली-बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाईवाला दूध, इन सबका प्रबंध पहले कर लो, तब सिरचन को बुलाओ; दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा। खाने-पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई ख़त्म। अधूरा रखकर उठ खड़ा होगा । आज तो अब अधकपाली दर्द से माथा टनटना रहा है। थोड़ा-सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूँगा।............'किसी दिन' माने कभी नहीं।

मोथी घास और पटेर की रंगीन शीतलपाटी, बाँस तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पतों की छतरी-टोपी तथा इसी तरह के बहुत-से काम हैं, जिन्हें सिरचन के सिवा गाँव में और कोई नहीं जानता। यह दूसरी बात है कि अब गाँव में ऐसे कामों को बेकाम का काम समझते हैं लोग। बेकाम का काम, जिसकी मजदूरी में अनाज या पैसे देने की कोई जरूरत नहीं। पेट-भर खिला दो, काम पूरा होने पर एकाध पुराना-धुराना कपड़ा देकर विदा करो। वह कुछ भी नहीं बोलेगा।............

कुछ भी नहीं बोलेगा, ऐसी बात नहीं। सिरचन को बुलानेवाले जानते हैं, सिरचन बात करने में भी कारीगर है।............महाजन टोले के भज्जू महाजन की बेटी सिरचन की बात सुनकर तिलमिला उठी थी-ठहरो। मैं माँ से जाकर कहती हूँ। इतनी बड़ी बात !

बड़ी बात ही है बिटिया। बड़े लोगों की बात ही बड़ी होती है। नहीं तो दो-दो पटेर की पाटियों का काम सिर्फ खँसारी का सत्तू खिलाकर कोई करवाए भला? यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी। सिरचन ने मुस्कुराकर जवाब दिया था।

उस बार मेरी सबसे छोटी बहन की विदाई होने वाली थी। पहली बार ससुराल जा रही थी। मानू के दूल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को खत लिखकर चेतावनी दे दी है-मानू के साथ मिठाई की पतीली न आवे, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो शीतलपाटियों के बिना आएगी मानू तो......। भाभी ने हँसकर कहा-बैरंग वापस ! इसलिए, एक सप्ताह पहले से ही सिरचन को बुलाकर काम पर तैनात करवा दिया था माँ ने। देख

सिरचन, इस बार नई धोती दूँगी; असली मोहर छापवाली धोती। मन लगाकर ऐसा काम करो कि देखनेवाले देखकर देखते ही रह जाएँ।

पान-जैसी पतली छुरी से बाँस की तीलियाँ और कमानियों को चिकनाता हुआ सिरचन अपने काम में लग गया। रंगीन सुतलियों में झब्बे डालकर वह चिक बुनने बैठा। डेढ़ हाथ की बुनाई देखकर ही लोग समझ गए कि इस बार एकदम नए फैशन की चीज बन रही है, जो पहले कभी नहीं बनी।

मँझली भाभी से नहीं रहा गया । परदे की आड़ से बोली-पहले ऐसा जानती कि मोहर छापवाली धोती देने से ही अच्छी चीज बनती है तो भैया को खबर भेज देती।

काम में व्यस्त सिरचन के कानों में बात पड़ गई। बोला-मोहर छापवाली धोती के साथ रेशमी कुर्त्ता देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती बहुरिया ! मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है......मानू दीदी का दूल्हा अफसर आदमी है । मँझली भाभी का मुँह लटक गया। मेरी चाची ने फुसफुसाकर कहा-किससे बात करती है बहू? मोहर छापवाली धोती नहीं, मुँगिया लड्डू। बेटी की विदाई के समय रोज मिठाई जो खाने को मिलेगी देखती है न !

दूसरे दिन चिक की पहली पाँती में सात तारे जगमगा उठे, सात रंग के । सतभैया तारा । सिरचन जब काम में मग्न रहता है तो उसकी जीभ जरा बाहर निकल आती है, ओठ पर। अपने काम में मग्न सिरचन को खाने-पीने की सुधि नहीं रहती। चिक में सुतली के फंदे डालकर उसने पास पड़े सूप पर निगाह डाली-चिउरा और गुड़ का एक सूखा ढेला। मैंने लक्ष्य किया, सिरचन की नाक के पास दो रेखाएँ उभर आईं। दौड़कर माँ के पास गया-माँ, आज सिरचन को कलेवा किसने दिया है, सिर्फ चिउरा और गुड़?

माँ रसोईघर के अन्दर पकवान आदि बनाने में व्यस्त थी। बोली-मैं अकेले कहाँ-कहाँ क्या-क्या देखूँ।..........अरी मँझली, सिरचन को बुँदिया क्यों नहीं देती?

-बुँदिया मैं नहीं खाता, काकी! सिरचन के मुँह में चिउरा भरा हुआ था। गुड़ का ढेला सूप में एक किनारे पड़ा रहा, अछूता।

माँ की बोली सुनते ही मँझली भाभी की भौंहें तन गईं। मुट्ठी-भर बुँदिया सूप में फेंककर चली गई।

सिरचन ने पानी पीकर कहा-मँझली बहूरानी अपने मैके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर बाँटती है क्या?

बस, मँझली भाभी अपने कमरे में बैठकर रोने लगी। चाची ने माँ के पास जाकर कहा–छोटी जाति के आदमी का मुँह भी छोटा होता है। मुँह लगाने से सिर पर चढ़ेगा ही। किसी की नैहर–ससुराल की बात क्यों करेगा वह ?

मँझली भाभी माँ की दुलारी बहू है। माँ तमककर बाहर आई सिरचन तुम काम करने आए हो, अपना काम करो। बहुओं से बतकुट्टी करने की क्या जरूरत? जिस चीज की जरूरत हो, मुझसे कहो।

सिरचन का मुँह लाल हो गया। उसने कोई जवाब नहीं दिया। बाँस में टँगे हुए अधूरे चिक में फंदे डालने लगा।

मानू पान सजाकर बाहर बैठकखाने में भेज रही थी। चुपके से एक पान का बीड़ा सिरचन को देती हुई बोली, इधर–उधर देखकर–सिरचन दादा, काम–काज का घर। पाँच तरह के लोग पाँच किस्म की बात करेंगे। तुम किसी की बात पर कान मत दो।

सिरचन ने मुस्कुराकर पान का बीड़ा मुँह में ले लिया। चाची अपने कमरे से निकल रही थी। सिरचन को पान खाते देखकर अवाक् हो गई। सिरचन ने चाची को अपने ओर अचरज से घूरते देखकर कहा–छोटी चाची, ज़रा अपनी डिबिया का गमकौआ ज़र्दा तो खिलाना। बहुत दिन हुए।

चाची कई कारणों से जली–भुनी रहती थी, सिरचन से। ग़ुस्सा उतारने का ऐसा मौका फिर नहीं मिल सकता। झनकती हुई बोली–मसखरी करता है? तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे। घर में भी पान और गमकौआ ज़र्दा खाते हो ?.........चटोर कहीं के। मेरा कलेजा धड़क उठा........।

बस सिरचन की उँगलियों में सुतली के फंदे पड़ गए मानो, कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा पान को मुँह में घुलाता रहा। फिर अचानक उठकर पिछवाड़े थूक आया। अपनी छुरी, हँसिया वगैरह समेट–सम्हालकर झोले में रखा। टँगी हुई अधूरी चिक पर एक निगाह डाली और हनहनाता हुआ आँगन से बाहर निकल गया।

चाची बड़बड़ाई–अरे बाप रे बाप ! इतनी तेजी ! कोई मुफ़्त में तो काम नहीं करता। आठ रुपये में मोहर छापवाली धोती आती है।..............इस मुँहझौंसे के न मुँह में लगाम है, न आँख में शील। पैसा खर्च करने पर सैकड़ों चिकें मिलेंगी। बाँतर टोली की औरतें सिर पर गट्ठर लेकर गली–गली मारी फिरती हैं।

मानू नहीं बोली। चुपचाप अधूरी चिक को देखती रही।.........सातों तारे मन्द पड़ गए!

माँ बोली–जाने दे बेटी। जी छोटा मत कर, मानू। मेले से खरीदकर भेज दूँगी।

मानू को याद आई, विवाह में सिरचन के हाथ की शीतलपाटी दी थी माँ ने। ससुरालवालों ने न जाने कितनी बार खोलकर दिखाया था पटना और कलकत्ता के मेहमानों को। वह उठकर बड़ी भाभी के कमरे में चली गई।

मैं सिरचन को मनाने गया। देखा, एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेटकर वह कुछ सोच रहा है। मुझे देखते ही बोला बबुआ जी! अब नहीं। कान पकड़ता हूँ, अब नहीं।.........मोहर छापवाली धोती लेकर क्या करूँगा? कौन पहनेगा?.............ससुरी खुद मरी, बेटे-बेटियों को भी ले गई अपने साथ। बबुआ जी, मेरे घरवाली जिंदा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता? यह शीतलपाटी उसी की बुनी हुई है। इस शीतलपाटी को छूकर कहता हूँ, अब यह काम नहीं करूँगा।..........गाँव-भर में तुम्हारी हवेली में मेरी क़दर होती थी।.........अब क्या? मैं चुपचाप लौट आया। समझ गया, कलाकार के दिल में ठेस लगी है। वह नहीं आ सकता।

बड़ी भाभी अधूरी चिक में रंगीन छीट का झालर लगाने लगी-यह भी बेजा नहीं दिखाई पड़ता । क्यों मानू!

मानू कुछ नहीं बोली।.........बेचारी! किन्तु, मैं चुप नहीं रह सका चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाय इसमें भी।

मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था।

स्टेशन पर सामान मिलाते समय देखा, मानू बड़े जतन से अधूरी चिक को मोड़कर लिए जा रही है अपने साथ। मन-ही-मन सिरचन पर गुस्सा आया। चाची के सुर में सुर मिलाकर कोसने को जी हुआ।.......कामचोर, चटोर!

गाड़ी आई। सामान चढ़ाकर मैं दरवाजा बंद कर रहा था कि प्लेटफार्म पर दौड़ते हुए सिरचन पर नजर पड़ी बबुआ जी। उसने दरवाजे के पास आकर पुकारा।

क्या है? मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा। सिरचन ने पीठ पर लदे हुए बोझ को उतारकर मेरी ओर देखा दौड़ता आया हूँ...........दरवाजा खोलिए! मानू दीदी कहाँ है? एक बार देखूँ!

मैंने दरवाजा खोल दिया।

सिरचन दादा! मानू इतना ही बोल सकी।

खिड़की के पास खड़े होकर सिरचन ने हकलाते हुए कहा-यह मेरी ओर से है। सब चीज है2 दीदी। शीतलपाटी, चिक और

एक जोड़ी आसनी कुश की। गाड़ी चल पड़ी।

मानू मोहर छापवाली धोती का दाम निकालकर देने लगी। सिरचन ने जीभ को दाँत से काटकर, दोनों हाथ जोड़ दिए।

मानू फूट-फूटकर रो रही थी। मैं बंडल को खोलकर देखने लगा-ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, रँगीन सुतलियों के फँदों का ऐसा काम, पहली बार देख रहा था।

फणीश्वर नाथ 'रेणु'

शब्दार्थ

पतीली	-	तांबे पीतल आदि का ऊँचे किनारे वाला गोलाकार बर्त्तन
पनियायी	-	ललचाई
झाल	-	कटुता, कड़वा
चिक	-	बाँस की तीलियों से बना झीना परदा
नैनू	-	मक्खन
शीतलपाटी	-	चिकनी और पतली चटाई

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

(1) गाँव के किसान सिरचन को क्या समझते थे ?

(2) इस कहानी में आये हुए विभिन्न पात्रों के नाम लिखिए ?

(3) सिरचन को पान का बीड़ा किसने दिया था ?

(4) आपके विचार से सिरचन का महत्त्व कम क्यों हो गया?

(5) सिरचन चिक और शीतलपाटी स्टेशन पर ले जाकर मानू को देता है। इससे उसकी किस विशेषता का पता चलता है?

(6) निम्नलिखित गद्यांशों को कहानी के अनुसार क्रमबद्ध रूप में सजाइए

(क) उस बार मेरी सबसे छोटी बहन की विदाई होने वाली थी। पहली बार ससुराल जा रही थी। मानू के दुल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को खत लिखकर चेतवानी दे दी है-मानू के साथ मिठाई की पतीली न आवे, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशनेबुल चिक और पटेर की दो शीतलपाटियों के बिना आएगी मानू तो.

(ख) मुझे याद है........मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता भोग क्या-क्या लगेगा?

(ग) मानू फूट-फूट कर रो रही थी। मैं बंडल को खोलकर देखने लगा ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, रंगीन सुतलियों के फँदों का ऐसा काम, पहली बार देख रहा था।

(7) निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगाइए

(क) सिरचन कामचोर था ।

(ख) सिरचन अपने काम में दक्ष था ।

(ग) सिरचन बात करने में भी कारीगर था ।

(घ) सिरचन वकील था ।

(8) कहानी के किन-किन प्रसंगों से ऐसा प्रतीत होता है कि सिरचन अपने काम को ज़्यादा तरज़ीह देता था उल्लेख कीजिए।

(9) इस कहानी में कौन सा पात्र आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों ?

पाठ से आगे

1. आपकी दृष्टि में सिरचन द्वारा चिक एवं शीतलपाटी स्टेशन पर मानू को देना कहाँ तक उचित था ?
2. काम के बदले थोड़ा-सा अनाज या चंद रुपये देकर क्या किसी मजदूर के मजदूरी का मूल्य चुकाया जा सकता है? इस सम्बन्ध में अपना मत व्यक्त कीजिए ।
3. इस कहानी का अंत किए गए अंत से अलग और क्या हो सकता है ? सोच कर लिखिए ।

इन्हें भी जानिए

मुहावरें : ऐसा वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ का बोध कराए, मुहावरा कहलाता है। मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पन्न होते हैं। जैसे आँख का तारा (बहुत प्यारा) । नमन अपने माता-पिता के आँखों का तारा है।

लोकोक्ति :

लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है। उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है तो 'लोकोक्ति' हो जाती है। जैसे एक पंथ दो काज (एक काम से दूसरा काम हो जाना)- पटना जाने से एक पंथ दो काज होंगे। कवि-सम्मेलन में कविता पाठ भी करेंगे और साथ ही जैविक उद्यान भी देखेंगे।

आइए इसके साथ ही कुछ ऐसी बातों को भी जानें, जिससे मुहावरे और लोकोक्तियों की समानताओं और असमानताओं का पता भी चले ।

1. मुहावरों और लोकोक्तियों में पर्यायवाची शब्द नहीं रखे जा सकते। यही कारण है कि इनका अनुवाद संभव नहीं।
2. लोकोक्ति स्वतंत्र वाक्य होते हैं, जबकि मुहावरे वाक्यांश होते हैं।

व्याकरण

1. इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करते हुए अर्थ स्पष्ट कीजिए

(क) कान देना

(ख) दम मारना

(ग) मुँह में लगाम न होना

(घ) सिर चढ़ाना।

गतिविधि

1. स्टेशन पर, सिरचन का पहुँचना एवं वहाँ मानू को सामग्री देने के अंश को पढ़ने के बाद जो चित्र आपके मस्तिष्क में उभरते हो उसे चित्र बनाकर वर्ग कक्ष में प्रदर्शित कीजिए ।
2. स्थानीय स्तर पर शीतलपाटी, चिक, आसनी की तरह कोई अन्य वस्तु प्रचलित हो तो उसे बनाकर वर्गकक्ष में दर्शाइए ।
3. आपके आस-पास होनेवाली कारीगरी से उत्पन्न वस्तुओं की सूची तैयार कीजिए।

8 बच्चे की दुआ

यह एक प्रार्थना गीत है इसमें दर्दमंद और वंचितों की हिफ़ाज़त का संकल्प है तथा ख़ुद को बुराई से बचाकर नेक राह पर चलने की दुआ माँगी गयी है।

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शम्अ की सूरत हो ख़ुदाया मेरी

दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत

ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या-रब
इल्म की शम्अ से हो मुझको मुहब्बत या-रब

हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्दमन्दों से ज़ईफ़ों से मुहब्बत करना

मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो, उस राह पे चलाना मुझको

मो0 इकबाल

शब्दार्थ

लब	-	होंठ
दुआ	-	प्रार्थना
ज़ीनत	-	शोभा
इल्म	-	शिक्षा
हिमायत	-	भलाई
मुहब्बत	-	प्यार, लगाव
चमन	-	फुलवारी
ज़इफ़ों	-	वृद्धों
नेक	-	अच्छा
या-रब	-	हे ईश्वर
राह	-	रास्ता

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. इस कविता में कवि किन-किन चीज़ों की चाह रख रहा है ?
2. कविता में संसार को बेहतर बनाने की कामना मुखर हुई है । उन कामनाओं को अपने शब्दों में लिखिए ।

पाठ से आगे

1. अल्लाह बुराई से बचाना मुझको तथा नेक राह में चलने की शक्ति प्रदान करना नज़्म की किन पंक्तियों में ऐसा भाव स्पष्ट किया गया है? नज़्म की उन पंक्तियों को लिखिए।
2. आपके घर में या पड़ोस में बुज़ुर्ग होंगे, आप उनकी देखभाल कैसे करना चाहेंगे ? उल्लेख कीजिए ।
3. अल्लाह और ईश्वर में कोई फ़र्क़ नहीं है। इस बात से आप कहाँ तक सहमत है ? स्पष्ट कीजिए ।
4. **व्याख्या कीजिए :**

   (क) ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या-रब। इल्म की शम्अ से हो मुझको मुहब्बत या-रब

   (ख) हो मेरे दम से यूं ही मेरे वतन की ज़ीनत । जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत

   (ग) मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको । नेक जो राह हो, उस राह पे चलाना मुझको

इन्हें भी जानिए

1. पाठ में अनेक शब्द दिए गए हैं, जिनमें नुक़्ते का प्रयोग है। उर्दू के विभिन्न वर्णों के नीचे विन्दु का प्रयोग होता है। इन्हें नुक़्ता कहते हैं। नुक़्ते का प्रयोग पाँच वर्णों में होता है-क, ख, ग, ज, फ। इनके चलते अर्थों में बदलाव आ जाता है। जैसे-

काज	-	काम	जरा	-	बुढ़ापा
काज़	-	बटन होल	ज़रा	-	थोड़ा
फन	-	साँप का फन	बाग	-	फुलवारी
फ़न	-	कला	बाग़	-	लगाम, रास
ख़ाना	-	किसी चीज को रखने की जगह			
खाना	-	भोजन			

पाठ से ऐसे शब्दों को चुनकर लिखिए जिसके नीचे नुक़्ता लगा है।

गतिविधि

इस कविता से मिलती-जुलती और भी कविताएँ या गीत आपने सुनी होंगी, उन्हें कक्षा में सुनाइए।

9 अशोक का शस्त्र-त्याग

वंशीधर श्रीवास्तव रचित एकांकी 'अशोक का शस्त्र–त्याग' अहिंसा के पक्ष में अपने कथानक का मार्मिक विकास करती है। शांति के पक्ष में सक्रिय होने की शिक्षा देती है। इस लिहाज़ से पाठ की उपादेयता उल्लेखनीय है। अभिनय, नाटकीय दृश्यों का संयोजन, प्रवाहमयता की दृष्टि से पाठ विशिष्ट है।

पहला दृश्य

(एक मैदान में मगध के सैनिकों के शिविर लगे हैं। बीच में मगध की पताका फ़हरा रही है। पताका के पास ही सम्राट अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। आकाश में तारे चमकने लगे हैं। शिविरों में दीपक जल गए हैं। अपने शिविर में अशोक अकेले टहल रहे हैं। उनके मुख पर चिन्ता की छाया है। वे कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते हैं।)

अशोक(स्वत:) : आज चार साल से यह युद्ध हो रहा है और कलिंग आज भी जीता नहीं जा सका। दोनों ओर से लाखों आदमी मारे गए हैं, लाखों घायल हुए हैं, पर हम आज भी असफल हैं। क्या होगा इसका परिणाम?

द्वारपाल : (सिर झुकाकर) राजन् ! संवाददाता आना चाहता है।

अशोक : आने दो।

संवाददाता : (प्रवेश कर) महाराज अशोक की जय हो। शुभ संवाद है। गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।

अशोक : (प्रसन्नतापूर्वक) मारे गए हैं! तो मगध की विजय हुई है! कलिंग जीत लिया गया है!
(संवाददाता चुप रहता है।)

अशोक : बोलते क्यों नहीं तुम? चुप क्यों हो?

संवाददाता : (धीरे से) बोलूँ क्या महाराज! कलिंग-दुर्ग के फाटक आज भी बंद है। फिर किस मुँह कहूँ कि कलिंग जीत लिया गया ।

अशोक : (उत्तेजित होकर) कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं?

संवाददाता : हाँ महाराज! कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं।

अशोक : (उत्तेजित होकर खड़े होते हुए) बंद हैं तो खुल जाएँगे। जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूँगा। कल या तो कलिंग के दुर्ग के फाटक खुल जाएँगे या मगध की सेना ही वापस चली जाएगी। जाओ । (हाथ से जाने का संकेत करते हैं।)

दूसरा दृश्य

(दूसरे दिन प्रातःकाल का समय। शस्त्र-सज्जित अशोक घोड़े पर बैठे हैं। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग-दुर्ग हैं। जिसके फाटक बंद हैं।)

अशोक : मेरे वीर सैनिको ! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम इस कलिंग को जीत नहीं पाए हैं। उसके किसी दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फ़हरा रही है। कलिंग के महाराज मारे गए हैं। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके हैं, फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है। आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएँगे।

सब सैनिक : (तलवार खींचकर) मगध की जय! सम्राट अशोक की जय!

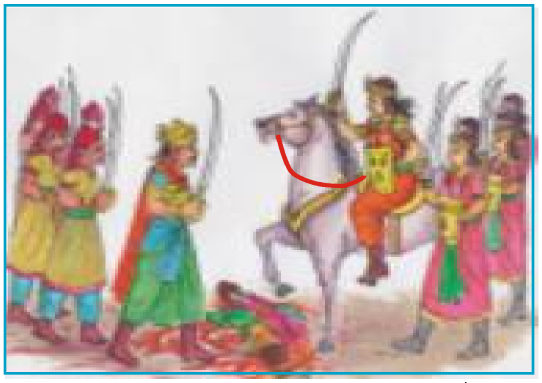

(सहसा दुर्ग का फ़ाटक खुल जाता है। सब आश्चर्य से उधर देखने लगते हैं। उनकी तलवारें खिंची की खिंची रह जाती हैं। शस्त्र-सज्जित स्त्रियों की विशाल सेना फ़ाटक के बाहर निकलने लगती है। सेना के आगे पुरुष भेस में एक वीरांगना है, जो सैनिक भेष में साक्षात् चंडी-सी दिखाई देती है। यह कलिंग महाराज की कन्या पद्मा है। स्त्रियों की सेना अशोक की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है। अशोक के सिपाही मंत्रमुग्ध-से देखते रह जाते हैं। अशोक भी चकित रह जाते हैं।)

पद्मा : (आगे बढ़कर अपनी सेना से) बहिनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है। जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है। तुम प्रण करो कि जननी जन्म-भूमि को पराधीन होते देखने के पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगी।

अशोक : (स्वतः) यह कौन है? क्या साक्षात् दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्धभूमि में उतर आई है? शेष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ हैं। क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना होगा? ना! मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह

पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा। (प्रकट) सैनिकों, स्त्रियों पर हाथ न उठाना। (आगे बढ़कर) तुम कौन हो देवी ?

पद्मा : मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ। जब तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता। कहाँ है अशोक, कहाँ है मेरे पिता का हत्यारा? मैं उससे द्वंद्व-युद्ध करना चाहती हूँ।

अशोक : अशोक तो मैं ही हूँ राजकुमारी! दोषी मैं ही हूँ। परंतु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की हैं। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

पद्मा : क्यों महाराज ?

अशोक : शास्त्र की आज्ञा है राजकुमारी।

पद्मा : और शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो? शास्त्र की आज्ञा है कि तुम अपनी विजय-लालसा पूरी करने के लिए लाखों माताओं की गोद सुनी कर दो? लाखों स्त्रियों की माँग का सिन्दूर पोंछ दो? फूँक दो उस शास्त्र को, जो तुम्हें यह सिखाता है। मैं तुमसे शास्त्र सीखने नहीं आई हूँ, शस्त्रों से युद्ध करने आई हूँ। तुम हत्यारे हो, मैं अपनी बलि चढ़ाकर तुम्हारे खून की प्यास बुझाने आई हूँ। अपने सिपाहियों से कहो कि तलवार उठाएँ, कलिंग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं। (अशोक सिर झुका लेते हैं।)

पद्मा : क्यों, सिर क्यों झुका लिया महाराज? मैं युद्ध चाहती हूँ, केवल युद्ध। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहुति होगी।

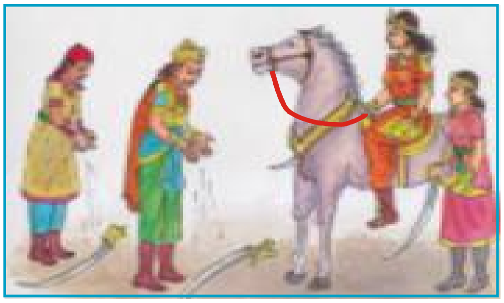

अशोक : बहुत हो चुका राजकुमारी। मैं अब युद्ध नहीं करूँगा। कभी युद्ध नहीं करूँगा। (तलवार नीचे फेंक देते हैं।)

पद्मा : यह क्या महाराज!

अशोक : (अपने सैनिकों से) तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेंक दो। आज से

अशोक तुम्हें कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देगा। फेंक दो अपनी तलवारें।
(सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवारें फेंक देते हैं।)

पद्‌मा : (आगे बढ़कर) मैं भुलावे में नहीं आ सकती महाराज! मैं तुमसे युद्ध करूँगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

अशोक : (सिर झुकाकर) तो लीजिए बदला राजकुमारी। मैं अपराधी हूँ। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को । मैं हथियार नहीं उठाऊँगा । मेरी प्रतिज्ञा अटल है। (अशोक सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं।)

पद्‌मा : तो जाइए महाराज ! स्त्रियाँ भी निहत्थों पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए। (पद्‌मा अपनी स्त्रियों की सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।)

तीसरा दृश्य

(अशोक और उसके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हुए हैं।)

बौद्ध भिक्षु : (अशोक से) कहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि.................

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि..................

बौद्ध भिक्षु : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे..................

अशोक : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे....................

बौद्ध भिक्षु : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

अशोक : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

बौद्ध भिक्षु : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

अशोक : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

बौद्ध भिक्षु : प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं शक्ति भर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

बौद्ध भिक्षु : बोलो

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

सभी :

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

(पटाक्षेप)

वंशीधर श्रीवास्तव

शब्दार्थ

शस्त्र		हाथ में थामकर चलाया जाने वाला हथियार, जैसे-तलवार
त्याग	–	छोड़ना
संवाददाता	–	संवाद पहुँचानेवाला
गुप्तचर	–	छिपकर टोह लेनेवाला, जासूस
संचालन	–	नेतृत्व, सुचारु रूप से चलाना
आत्मसमर्पण	–	अपने आपको उपस्थित करना, स्वयं पकड़ में आना
पराधीन	–	दूसरों के अधीन
वीरांगना	–	वीर महिला, युद्ध में लड़ने वाली महिला
साक्षात्	–	सामने
प्रतिज्ञा	–	प्रण, निश्चय

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पद्मा के ललकारने पर भी अशोक ने युद्ध करना स्वीकार क्यों नहीं किया ?
2. पद्मा को अशोक से बदला लेने का अच्छा अवसर था, तब भी उसने अशोक को जीवित क्यों छोड़ दिया?

3.

बुद्धं शरणं गच्छामि ।
धर्मं शरणं गच्छामि ।
संघं शरणं गच्छामि ।

बॉक्स में दिए गए उपर्युक्त वाक्य संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं । इन्हें हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

पाठ से आगे

1. सैनिकों को उत्साहित करने के लिए राजकुमारी पद्‌मा और सम्राट अशोक द्वारा कही गयी बातों की तुलना कीजिए और बताइए कि अधिक प्रभावशाली कौन है ?
2. इस एकांकी को कहानी के रूप में लिखिए।
3. अगर आप पद्‌मा की जगह होते तो क्या करते? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
4. कल्पना कर बताइए कि यदि अशोक और पद्‌मा का युद्ध हो गया होता तो क्या होता ?
5. 'अस्त्र' और 'शस्त्र' के अंतर को लिखिए ।
6. 'युद्ध से हानि' विषय पर अपने मित्र को एक पत्र लिखिए ।

व्याकरण

1. नीचे तीन वाक्य दिए गए हैं जो प्रश्नवाचक, पूर्णविराम और विस्मयादि स्थितियों को प्रकट करते हैं। पढ़िए और समझिए।

(क) मगध की विजय हुई है?

(ख) मगध की विजय हुई है।

(ग) मगध की विजय हुई है !

उक्त उदाहरण के आधार पर ऐसे ही तीन वाक्यों को लिखिए।

2. वाक्य में प्रयोग करके 'शस्त्र' और 'शास्त्र' में अन्तर स्थापित कीजिए।

गतिविधि

1. इस एकांकी के कुछ संवाद जोशीले आवाज़ में कहे गए हैं और कुछ नरम आवाज़ में। ऐसे दो-दो संवादों को लिखिए और अभिनीत कीजिए।
2. किसी उत्सव के मौके पर इस एकांकी का मंचन कीजिए।

10 ईर्ष्या : तू न गई मेरे मन से

रामधारी सिंह 'दिनकर' के इस रोचक निबंध में जीवन के रोज़मर्रा के व्यवहारों पर टिप्पणी है और सही-संतुलित जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण विकसित करने की सीख है। जीवन-कौशल अध्ययन का एक उल्लेखनीय पहलू है। तनावों को कम करने में व्यक्ति की अपनी अंतरात्मा खास योगदान देती है। यह निबंध इस अंतर्निहित समझ को विकसित करता है। शीर्षक रोचक है और पहली नज़र में पढ़ने का आमंत्रण देता है। बिहार के यशस्वी साहित्यकार दिनकर के रचना संसार की विविधता को भी समझने में पाठ सहायक है।

मेरे घर के दाहिने एक वकील रहते हैं, जो खाने-पीने से अच्छे हैं, दोस्तों को भी ख़ूब खिलाते हैं और सभा-सोसाइटियों में भी काफी भाग लेते हैं। बाल-बच्चों से भरा-पूरा परिवार, नौकर भी सुख देने वाले और पत्नी भी अत्यंत मृदुभाषिणी। भला एक सुखी मनुष्य को क्या चाहिए ?

मगर, वे सुखी नहीं हैं। उनके भीतर कौन-सा दाह है, इसे मैं भली-भाँति जानता हूँ। दरअसल उनकी बगल में जो बीमा एजेंट हैं, उनके विभव की वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता रहता है। वकील साहब को भगवान ने जो कुछ दे रखा है, वह उनके लिए काफी नहीं दीखता। वे इस चिंता में भुने जा रहे हैं कि काश! एजेंट की मोटर, उसकी मासिक आय और उसकी तड़क-भड़क भी मेरी हुई होती।

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनंद नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद है; बल्कि उन वस्तुओं से दु:ख उठाता है, जो दूसरों के पास है। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है। और इस तुलना में पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है। एक उपवन को पाकर भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनंद नहीं लेना और बराबर इस चिंता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निंदा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जाएँगे और तब जो स्थान रिक्त होगा, उस पर अनायास मैं ही बिठा दिया जाऊँगा।

मगर, ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो, अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निंदा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण अपने ही भीतर के सद्‌गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निंदा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा अपने गुणों का विकास करे।

ईर्ष्या का काम जलाना है। मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों को जानते होंगे जो ईर्ष्या और द्‌वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फ़िक्र में ही रहते हैं कि कहाँ सुननेवाले मिले कि अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक कांड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो, विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। मगर, जरा उनके अपने इतिहास को भी देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जब से उन्होंने इस सुकर्म का आरंभ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि अगर वे निंदा करने में समय और शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज उनका स्थान कहाँ होता ? चिंता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचंड चिंता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिंदगी ही खराब हो जाती है। किंतु ईर्ष्या शायद चिंता से भी बदतर चीज है, क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है। मृत्यु, शायद, फिर भी श्रेष्ठ है बनिस्बत इसके कि हमें अपने गुणों को कुंठित बनाकर जीना पड़े। चिंता-दग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र है। किंतु ईर्ष्या से जला भुना आदमी ज़हर की एक चलती-फिरती गठरी के समान है जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है।

ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष ही नहीं है, प्रत्युत, इससे मनुष्य के आनंद में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सूर्य उसे मद्धिम-सा दीखने लगता है, पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानो, वे देखने योग्य ही नहीं हों।

आप कहेंगे कि निंदा के बाण से अपने प्रतिद्वंद्वियों को बेधकर हँसने में एक आनंद है और यह आनंद ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है और आनंद भी दैत्यों का आनंद होता है।

ईर्ष्या का संबंध प्रतिद्वंद्वियों से होता है, क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है, क्योंकि प्रतिद्वंद्वियों से भी मनुष्य का विकास होता है। किंतु, अगर आप संसार-व्यापी सुयश चाहते हैं तो आप, रसेल के मतानुसार, शायद, नेपोलियन से स्पर्धा करेंगे। मगर, याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्धा करता था और सीजर सिकंदर से तथा सिकंदर हरक्युलिस से, जिस हरक्युलिस के बारे में इतिहासकारों का यह मत है कि वह कभी पैदा ही नहीं हुआ।

ईर्ष्या का एक पक्ष सचमुच ही लाभदायक हो सकता है जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वंद्वियों का समकक्ष बनाना चाहता है। किंतु यह तभी संभव है, जबकि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज़ है, जो उसके भीतर नहीं है; कोई वस्तु है, दूसरों के पास है किंतु वह यह नहीं समझ पाता है कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए। गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी, मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि वे लोग भी अपने-आपसे शायद, वैसे ही असंतुष्ट हों।

आपने यह भी देखा होगा कि शरीफ़ लोग अक्सर यह सोचते हुए अपना सिर खुजलाया करते हैं कि फलां आदमी मुझसे क्यों जलता है, मैंने तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ा; और अमुक व्यक्ति इस कदर मेरी निंदा में क्यों लगा हुआ है? सच तो यह है कि मैंने सबसे अधिक भलाई उसीकी की है।

ये सोचते हैं मैं तो पाक-साफ हूँ, मुझमें किसी भी व्यक्ति के लिए दुर्भावना नहीं है; बल्कि, अपने दुश्मनों की भी मैं भलाई ही सोचा करता हूँ। फिर ये लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हैं? मुझमें कौन-सा वह ऐब है, जिसे दूर करके मैं इन दोस्तों को चुप कर सकता हूँ?

ईश्वरचंद्र विद्यासागर जब इस तजुरबे से होकर गुजरे तब उन्होंने एक सूत्र कहा, 'तुम्हारी निंदा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।'

और नीत्से जब इस कूचे से होकर निकला, तब उसने ज़ोरों का एक ठहाका लगाया और कहा कि यार, ये तो बाज़ार की मक्खियाँ हैं जो अकारण हमारे चारों ओर भिनभिनाया करती हैं।

ये सामने प्रशंसा और पीछे-पीछे निंदा किया करती हैं। हम इनके दिमाग़ पर बैठे हुए हैं, ये मक्खियाँ हमें भूल नहीं सकतीं और चूँकि ये हमारे बारे में बहुत सोचा करती हैं, इसलिए ये हमसे डरती हैं और हम पर शंका भी करती हैं।

ये मक्खियाँ हमें सजा देती हैं हमारे गुणों के लिए। ऐब को तो ये माफ़ कर देंगी, क्योंकि बड़ों के ऐब को माफ़ करने में भी एक शान है, जिस शान का स्वाद लेने को ये मक्खियाँ तरस रही हैं।

जिनका चरित्र उन्नत है, जिनका हृदय निर्मल और विशाल है, वे कहते हैं, 'इन बेचारों की बातों से क्या चिढ़ना? ये तो खुद ही छोटे हैं।'

मगर, जिनका दिल छोटा और दृष्टि संकीर्ण है, वे मानते हैं कि जितनी भी बड़ी हस्तियाँ हैं, उनकी निंदा ही ठीक है। और जब हम इनके प्रति उदारता और भलमनसाहत का बर्ताव करते हैं, तब भी वे यही समझते हैं कि हम उनसे घृणा कर रहे हैं। और हम चाहे उनका जितना उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।

दरअसल, हम जो उनकी निंदा का जवाब नहीं देकर चुप्पी साधे रहते हैं, इसे भी वे हमारा अहंकार समझते हैं। खुशी तो उन्हें तभी हो सकती है, जब हम उनके धरातल पर उतरकर उनके छोटेपन के भागीदारी बन जाएँ।

सारे अनुभवों को निचोड़कर नीत्से ने एक दूसरा सूत्र कहा, 'आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।'

तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से कहता है कि 'बाज़ार की मक्खियों को छोड़कर एकांत की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान है, उसकी रचना और निर्माण बाज़ार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नए मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते हैं।' जहाँ बाज़ार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वह जगह एकांत है।

यह तो हुआ ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय। किंतु, ईर्ष्या से आदमी कैसे बच सकता है?

ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है । जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा जागेगी उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

ह्रास	–	गिरावट, कमी
ग्रामोफोन	–	(रेकार्ड प्लेयर) शब्द ध्वनियों को टेप करके पुन: सुनाने वाला यंत्र
ध्येय	–	लक्ष्य
सुकर्म	–	अच्छा काम
बदतर	–	ख़राब
बनिस्बत	–	बजाय, अलावा
प्रतिद्वंद्वी	–	विपक्षी, मुकाबला करने वाला
व्यापी	–	फैलाव
स्पर्धा	–	प्रतियोगिता
संकीर्ण	–	तंग, सिकुड़ा हुआ
उन्नत	–	ऊँचा, अच्छा, विकसित

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. वकील साहब सुखी क्यों नहीं हैं ?
2. ईर्ष्या को अनोखा वरदान क्यों कहा गया है ?
3. ईर्ष्या की बेटी किसे और क्यों कहा गया है ?
4. ईर्ष्यालु से बचने का क्या उपाय है ?
5. ईर्ष्या का लाभदायक पक्ष क्या हो सकता है ?

पाठ से आगे

1. नीचे दिए गए कथनों का अर्थ समझाइए

(क) जो लोग नए मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाज़ारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।

(ख) आदमी में जो गुण महान समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।

(ग) चिंता चिता समान होती है।

2. अपने जीवन की किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब

(क) किसी को आपसे ईर्ष्या हुई हो।

(ख) आपको किसी से ईर्ष्या हुई हो।

3. अपने मन से ईर्ष्या का भाव निकालने के लिए क्या कर

व्याकरण

निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(1) मृदुभाषिणी –
(2) चिंता –
(3) सुकर्म –
(4) बाज़ार –
(5) जिज्ञासा –

इन्हें भी जानिए

वाक्य विचार की पूर्णता को प्रकट करनेवाले वैसे शब्द स
जिसमें कर्त्ता और क्रिया दोनों होते हैं। जैसे मोहन

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के हैं

1. सरल या साधारण वाक्य
2. मिश्र वाक्य
3. संयुक्त वाक्य

सरल या साधारण वाक्य :

जिस वाक्य में एक क्रिया एवं एक कर्त्ता होता है, उसे '
कहते हैं। जैसे-वर्षा होती है।

मिश्र वाक्य :

जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अतिरिक्त दूसरा
वाक्य कहते हैं। जैसे:-वह कौन-सा मनुष्य है, जिसने महात्मा गाँधी
मैं खाना खा चुका तो वह आया।

संयुक्त वाक्य :

जिस वाक्य में साधारण या मिश्र वाक्य का मेल संयोजक
संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे:-मैंने खाना खाया और भूख मिट गई
पेट में दर्द होने लगा, और दर्द इतना बढ़ा कि तुरन्त डॉक्टर को

2. बॉक्स में दी गई जानकारी के आधार पर तीनों प्रकार के व
पाठ से चुनकर लिखिए ।

गतिविधि

1. पाठ में आए महान विभूतियों के नामों की सूची बन
बारे में जानिए ।

1.

A. Warmer

**Ask children t
they have.**

This is the way
We wash our face,
Wash our face,
Wash our face.
This is the way we